भारतीय छोड़ो आन्दोलन के समाजवादी सेनानी

डॉ0 अमित कुमार

भारत में समाजवादी चिन्तन का विकास जिस सन्दर्भ में हुआ वह यूरोपीय समाजवाद के सन्दर्भ से दो बातों में भिन्न था। भारत में समाजवाद का विकास सामाजिक तथा आर्थिक पुनर्निर्माण की एक योजना के रूप में ही नहीं हुआ, बल्कि वह क्रूर विदेशी साम्राज्यवाद के बन्धनों से राजनीतिक मुक्ति की एक विचारधारा के रूप में भी विकसित हुआ। 1900 से 1947 के काल में भारत की मूल समस्या देश की राजनीतिक स्वतंत्रता थी। कोई भी लोकप्रिय दल उसकी उपेक्षा नहीं कर सकता था।

भारतीय समाजवादी चिन्तकों में राजा राममोहन राय, स्वामी दयानन्द सरस्वती, रामकृष्ण, स्वामी विवेकानन्द, बाल गंगाधर तिलक, माहत्मा गाँधी, जवाहरलाल नेहरू, नरेन्द्र देव, जयप्रकाश नारायण तथा राम मनोहर लोहिया का योगदान अनुकरणीय रहा है।

रामकृष्ण द्वारा प्रतिपादित समन्वयवाद एवं उदार दृष्टिकोण से विवेकानन्द, गाँधी, रवीन्द्रनाथ एवं राधाकृष्णन को एक उदार विश्व–दृष्टि विकसित करने में बहुत सहायता मिली। वे सच्चे समाजवादी इसलिए थे क्योंकि वे व्यक्ति के हित की अपेक्षा समाज के हित को अधिक महत्त्व देते थे। वे तथाकथित समाजवादियों से कहीं ऊँचे दर्जे के और सच्चे समाजवादी थे क्योंकि उनका आचरण उनके सिद्धान्तों के अनुरूप था।